INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS

Volume 3, Issue 8, August 2015 ISSN: 2320-2882 (Online)

ORIGINAL ARTICLE

Impact Factor: 0.345(GIF)

www.ijcrt.net

भारतीय दर्शन मे ज्ञान का सम्प्रत्यय

डा0 गोविन्द प्रसाद मिश्रा

असि0 प्रोफेसर–दर्शन शास्त्र विभाग

पतंजलि विश्वविद्यालय हरिद्वार

drgovindmishra@gmail.com

शोध आलेख सार

भारतीय चिंतन परम्परा में ज्ञान और विज्ञान दो अलग–2 सम्प्रत्यय हैं। जिस प्रकार जीवन दिशा की दो धाराएँ हैं–श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग। उसी प्रकार इस मार्ग पर प्रेरित बुद्धि के भी दो रुप हैं– (1) ज्ञान बुद्धि और (2) विज्ञान बुद्धि। अमरकोष के अनुसार मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर बुद्धि को 'ज्ञान' कहते हैं– जबकि शिल्प और शास्त्र की ओर उन्मुख बुद्धि को 'विज्ञान'–

''मोक्षे धीर्ज्ञानमन्यत्र विज्ञानं शिल्पशास्त्रयोः।
मुक्तिकैवल्यनिर्वाणश्रेयोनिःश्रेयसामृतम्''।।[1]

किन्तु बोलचाल की भाषा में प्रत्येक जानकारी ज्ञान है तो किसी क्षेत्र में सुव्यवस्थित जानकारी विज्ञान। भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण से ज्ञान जीवन का आधार है। यह मुक्ति का साधन है। योग और मोक्ष दोनों के लिए ही ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि सभी भारतीय दार्शनिक ज्ञान के महत्व को स्वीकार करते हैं फिर भी ज्ञान विषयक उनके सिद्धान्त में मतैक्य नहीं है जिसका कारण है उनका अपना अलग–2 तत्वमीमांसीय विचार। वस्तुतः भारतीय ज्ञानमीमांसा तत्वमीमांसा का साधन है। अतः प्रत्येक भारतीय दार्शनिक सम्प्रदाय ने अपने तत्वमीमांसीय निष्कर्ष के अनुरुप ही अपनी ज्ञानमीमांसीय विवेचनाएँ प्रस्तुत की हैं, यथा– सांख्य–योग एवं अद्वैत वेदान्त दर्शन ज्ञान को द्रव्य रुप मानते हैं तो चार्वाक, न्याय वैशेषिक और प्रभाकर मीमांसक गुण रुप। ये ज्ञान को द्रव्य का आगन्तुक लक्षण मानते हैं परन्तु विशिष्ट अद्वैत दर्शन तथा जैन दर्शन ज्ञान को द्रव्य का स्वरुप लक्षण स्वीकार करते हैं जबकि भट्ट मीमांसा दर्शन के अनुसार ज्ञान न तो द्रव्य है, और न गुण है, यह क्रिया है। शून्यवादी बौद्ध दर्शन का मत है कि ज्ञान न तो दव्य है न गुण है और न ही क्रिया है अपितु वह शून्य है परन्तु यह शून्यता अभाव नही है बल्कि यह वाणी से परे होना है।

शोध आलेख

ज्ञान एक सरल मानसिक प्रत्यय है। प्रायः अग्रेंजी भाषा में ज्ञान शब्द के लिए 'नालेज' प्रयुक्त होता है किन्तु दार्शनिक दृष्टि से यह शब्द भारतीय सन्दर्भ मे ज्ञान का सही अर्थ प्रकट नही कर पाता क्योंकि नालेज का अर्थ जानना होता है जबकि ज्ञान सिर्फ जानकारी न होकर सभी प्रकार के दुखों से मुक्ति–मोक्ष का मार्ग है। **''ज्ञानात् मुक्तिः ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः''** ऐसा भारतीय दर्शन वेदान्त का उद्घोष है। पुनः 'नालेज' पद के सन्दर्भ में सत्यता–असत्यता का प्रश्न नही हो सकता। 'नालेज' सदैव सत्यता को सूचित करता है। ट्रू नालेज' एक पुनरुक्ति और 'फाल्स नालेज' एक आत्म व्याघाती पद कहा जायेगा जबकि भारतीय सन्दर्भ मे ज्ञान वैध–अवैध हो सकता है। यथार्थ ज्ञान को प्रमा एंव अयथार्थ ज्ञान को अप्रमा कहा गया है। इस लिए नालेज शब्द प्रमा का समानार्थी कहा जा सकता है, ज्ञान का नहीं।

भारतीय दार्शनिक परम्परा में ज्ञान, बोध, विज्ञान, प्रमा, प्रज्ञा आदि शब्दों का प्रयोग कहीं–2 समान अर्थ मे हुआ है जबकि कहीं इनमें अन्तर भी स्पष्ट हुआ है। भारतीय दर्शन मे ज्ञान के तीन संघटक तत्व हैं ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान के साधन (प्रमाण) जिन्हे शब्दान्तर से प्रमाता, प्रमेय और प्रमाण भी कहा गया है। इन तीनों तत्वो को सम्मिलित रुप से त्रिपुटी ज्ञान कहते हैं।

यद्यपि ज्ञान के स्वरुप को लेकर भारतीय दर्शनों में अनेक तरह की व्याख्याए हुई हैं फिर भी सभी भारतीय दर्शन यह मानते हैं कि ज्ञान वह है जो विषय वस्तु को प्रकाशित करे। ज्ञान वस्तुओ के स्वरुप का प्रकाशक होता है।

ज्ञानोत्पत्ति एवं स्वरुपः– ज्ञान की उत्पत्ति के सन्दर्भ मे भिन्न–2 दर्शन अपना स्वतन्त्र मत रखते हैं। न्याय वैशेषिक दर्शन का मानना है कि ज्ञान मन के माध्यम से उत्पन्न होता है, मन ही ज्ञान का कारण है।[2]

न्याय दर्शन में ज्ञान को बुद्धि और उपलब्धि का पर्यायवाची कहा गया है–
बुद्धिस्रुपवलब्धिर्ज्ञानमित्यनर्थान्तरम्।[3]

वैशेषिक दर्शन में भी इनको पर्यायवाची ही कहा गया है।[4]
प्रशस्तपाद ने ज्ञान, बुद्धि, उपलब्धि के साथ–2 प्रत्यय को भी पर्यायवाची कहा है–
बुद्धिःउपलब्धिज्ञानम् प्रत्यय इति पर्यायः।[5]

सांख्य–योग दर्शन में ज्ञान की उत्पत्ति बुद्धि–वृत्ति के माध्यम से होती है। सांख्य दार्शनिक ज्ञान की उत्पत्ति की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि ज्ञान–प्रक्रिया में पहले इन्द्रिय के माध्यम से विषय का सम्बन्ध मन से होता है, तत्पश्चात मन इन विषय सम्वेदनों को बुद्धि तक पहुँचाता है। विषय के सम्पर्क में आकर बुद्धि विषय का आकार ग्रहण कर लेती है।[6]
इस प्रकार बुद्धि का विषयकार हो जाना ही 'वृत्ति' है। किन्तु यह 'वृत्ति' ज्ञान नही हैं। जब बुद्धि–वृत्ति पुरुष के प्रकाश से प्रकाशित होती है तब ज्ञान उत्पन्न होता है।[7]

ज्ञान के प्रकारः–प्रायः सम्पूर्ण ज्ञान को दो प्रकार का माना गया है–प्रमा एवं अप्रमा।
प्रमा का अर्थ यथार्थ ज्ञान या अनुभूति होता है जबकि अप्रमा अयथार्थ अनुभव को कहते हैं। 'यथार्थ अनुभूतिः प्रमा'[8]
इन्ही को वैध और अवैध ज्ञान भी कहते हैं। वैशेषिक दर्शन में इन्हे विद्या एवं अविद्या कहा गया है।[9]

सांख्य–योग दर्शन में ज्ञान अथवा वृत्ति के पाँच भेद बताये गये हैं।[10]
(1) प्रमा (2) विपर्यय (भ्रम) (3) विकल्प (संशय) (4) निद्रा (स्वप्न) और (5) स्मृति।
इनमें यथार्थ ज्ञान प्रमा है और शेष चार अप्रमा रुप हैं।[11]

न्याय दर्शन में ज्ञान के भेद को लेकर मतभेद प्रकट होता है। श्री सतीश चन्द्र चटर्जी कें अनुसार न्याय दर्शन में ज्ञान के दो प्रकार हैं– (1) अनुभूति रुप ज्ञान और (2) स्मृति रुप ज्ञान।
अनुभूति के दो प्रकार हैं–प्रमा और अप्रमा। प्रमा चार तरह का होती है– प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति और शब्द। अप्रमा के तीन रुप हैं– संशय, विपर्यय और तर्क। 'स्मृति' प्रमा और अप्रमा की कोटि से बाहर का ज्ञान है। इसके दो भेद हो सकते हैं–यथार्थ और अयथार्थ। किन्तु डा0 श्री नारायण मिश्र उपर्युक्त वर्गीकरण से सहमत नही हैं उनके अनुसार स्मृति अप्रमा के अन्तर्गत है।

वैशेषिक दर्शन में ज्ञान के दो वर्ग हैं– (1) विद्या और (2) अविद्या। विद्या प्रमा रुप है और अविद्या अप्रमा रुप। विद्या चार प्रकार की है–प्रत्यक्ष, अनुमिति, स्मृति और आर्षज्ञान–
''विद्यापि चतुर्विधा
प्रत्यक्ष लैंगिक स्मृत्यार्षलक्षण।''[12]
अविद्या के भी चार भेद हैं–संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय तथा स्वप्न–
तत्रविद्या चतुर्विधा संशय विपर्ययानध्यवसाय स्वप्न लक्षणा।[13] (वही)

मीमांसा दर्शन में महर्षि जैमिनी कृत मीमांसा सूत्र के शाबर भाष्य पर आधारित दो प्रस्थान ख्यात हैं–प्रभाकर मीमांसा तथा भट्ट मीमांसा जिनके प्रवर्तक क्रमशः प्रभाकर मिश्र एवं कुमारिल भट्ट हैं।

प्रभाकर के मत में ज्ञान के दो रुप हैं– भावरुप ज्ञान और अभाव रुप ज्ञान। भावरुप ज्ञान दो तरह का होता है– प्रमा रुप साक्षत् ज्ञान अथवा अनुभूति जन्यज्ञान एवं अप्रमा रुप असाक्षात् ज्ञान अथवा अनानुभूत ज्ञान या स्मृति।
साक्षात ज्ञान प्रमा के पाँच प्रकार है– प्रत्यक्ष, अनुमिति, उपमिति, शाब्दी प्रमा एवं अर्थापत्ति। असाक्षात ज्ञान (अप्रमा) के अन्तर्गत स्मृति, संशय एवं स्वप्न को माना गया है।[14]

कुमारिल भट्ट मतानुसार भी ज्ञान प्रमा एवं अप्रमा रुप है। प्रमा रुप ज्ञान के छः भेद हैं– प्रत्यक्ष अनुमिति, उपमिति, शाब्दी प्रमा, अर्थापत्ति एवं अनुपलब्धि। अप्रमा रुप ज्ञान पाँच प्रकार का होता है–स्मृति, संशय, विपर्यय (भ्रम) तथा संवाद (अनुवाद)[15]

वेदान्तः– वेदान्त दर्शन में ज्ञान के दो रुप हैं–यथार्थज्ञान या प्रमा और मिथ्या ज्ञान यानी अप्रमा। अबाधित एवं अनधिगत ज्ञान ही यर्थाथ ज्ञान है– **अनधिगताबाधित विषय ज्ञानत्वम्।**[16]
यर्थाथ ज्ञान या प्रमा के छः रुप है– प्रत्यक्ष प्रमा, अनुमिति, उपमिति, शाब्दी प्रमा, अर्थापत्ति और अनुपलब्धि। मिथ्या ज्ञान अप्रमा है जिसके दो रुप हैं–विपर्यय या भ्रम और स्वप्न। वेदान्त दर्शन, न्याय दर्शन के विपरीत स्मृति को प्रमा रुप स्वीकार करता है–**स्मृति साधरणं त्वबाधित विषयज्ञानत्वम्।**[17]

अद्वैत वेदान्त दर्शन में पारमार्थिक और व्यावहारिक ज्ञान का भी भेद किया गया है। पारमार्थिक दृष्टि से ज्ञान में ज्ञाता–ज्ञेय का अभेद होता है और यह अबाधित होने से यथार्थ ज्ञान होता है जबकि व्यावहारिक ज्ञान में ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान का भेद सदैव बना रहता है तथा ब्रह्म ज्ञान होने पर व्यावहारिक ज्ञान का खण्डन हो जाता है इसलिए इसे यथार्थ ज्ञान नहीं कहा जा सकता।

जैन दर्शन मे ज्ञान का अर्थ है विषय की चेतना। यह ज्ञान अथवा चेतना जीव का गुण है। जैन दार्शनिक ग्रन्थ तत्त्वार्थ सूत्र के अनुसार ज्ञान पाँच प्रकार का होता है– मति, श्रुति, अवधि, मनः पर्याय और केवल ज्ञान– **मतिश्रुताविधमनःपर्ययकेवलानिज्ञानम्।**[18]

ये सम्यक ज्ञान कहे गये हैं जबकि मिथ्या ज्ञान भी होता है जिसके तीन रुप हैं– संशय, विपर्यय, (भ्रम) अनध्यवसाय (अनिश्चय)।

बौद्ध दर्शन मे योगाचार विज्ञानवाद सम्प्रदाय के अनुसार एक मात्र विज्ञान की ही सत्ता है। ज्ञान अथवा विज्ञान मात्र ही सत्य है– विज्ञप्तिमात्रता सिद्धिः।
यह विज्ञान चैतन्य स्वरुप तो है किन्तु वेदान्त दर्शन की तरह शुद्ध शाश्वत चैतन्य स्वरुप न होकर विज्ञप्तिका प्रवाह मात्र है। यह स्थायी न होकर प्रतिक्षण परिवर्तन शील है। इसलिए इसे विज्ञप्ति कहते हैं।
बौद्ध शून्यतावादी सम्प्रदाय विज्ञान अथवा विज्ञप्ति को भी अन्तिम सत्य नही मानते। उसके अनुसार हमारा समस्त व्यावहारिक ज्ञान आभास मात्र है। परमार्थ रुप मे शून्यता (निषेध) ही सत्य है इस लिए बौद्ध मत ज्ञान की व्यावहारवादी व्याख्या ही प्रस्तुत करता है।

बौद्ध मत मे ज्ञान के दो रुप हैं–सम्यक् ज्ञान और मिथ्या ज्ञान। सम्यक् ज्ञान ही प्रमा है और मिथ्या ज्ञान अप्रमा।
धर्म कीर्ति के अनुसार सम्यक ज्ञान के दो लक्षण हैं– अविसवांदित्व एंव अज्ञातप्रकाशकत्व।[19]
सम्यक् ज्ञान ही सभी पुरुषार्थो की सिद्धि का साधन है–**सम्यक्ज्ञानपूर्विका सर्वपुरुषार्थ सिद्धिरिति।**[20]
सम्यक् ज्ञान के दो रुप हैं–प्रत्यक्ष और अनुमिति। अप्रमा रुप मिथ्या ज्ञान के अन्तर्गत संशय और विपर्यय (स्वप्न आदि) आते हैं जो सम्यक् ज्ञान के विरुद्ध धर्मी हैं। ये भ्रमित करने वाला ज्ञान है। शेरवात्स्की के

अनुसार यह ज्ञान चेतन प्राणियों के लिए उनकी आकाँक्षाओं और इच्छाओं का वंचक होता है–यह भ्रमित करने वाला है इसीलिए मिथ्या ज्ञान कहलाता है।[21]

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारतीय दर्शन में ज्ञान की अनेक प्रकार से व्याख्या की गई है किन्तु एक निश्चित सर्वमान्य परिभाषा में ज्ञान को नही बाँधा जा सका है। यथार्थ ज्ञान को प्रमा एवं अयथार्थ ज्ञान को अप्रमा कहा गया है एवं इनकी विस्तृत विवेचना व्यावाहारिक एवं पारमर्थिक दृष्टिकोण से की गई है।

सन्दर्भ सूची–

1. अमरकोष–प्रथमकाण्ड–पंचमवर्ग श्लोक–6
2. न्यायसूत्र–वास्यायन भाष्य–1/1/16
3. न्यायसूत्र–1/1/15
4. वैशेषिक दर्शन 1/1/6
5. न्याय कन्दली प्रशस्तपाद भाष्य पृ0–171
6. सांख्य दर्शन–1/155
7. सुषमा टीका, सां0 का0–5
8. अद्वैत चिन्ताकौस्तुभ–3/4
9. वैशेषिक सूत्र–9, 2, 11–12
10. सांख्यदर्शन–2/33
11. सांख्य तत्व कौमुदी–5
12. प्रशस्तपाद भाष्यम्
13 वही
14. डा0 नीलिमा सिंहा–भारतीय ज्ञान मीमांसा–पृष्ठ–10
15. वही पृष्ठ–11
16. वेदान्त परिभाषा
17. वही
18. तत्त्वार्थ सूत्र–9
19. प्रमाणवार्तिक–1/7
20. शेरबात्स्की बौद्ध न्याय–पृ0–70
21. वही।